कविता

शीर्षक- मैं एक शिक्षक हूँ

V K Mishra

मैं एक शिक्षक हूँ

सृष्टि के आरम्भ से आदि से अनन्त तक,
जीवन की उत्पत्ति से जीवन के अन्त तक,
सबका मैं रक्षक हूँ,
मैं एक शिक्षक हूँ, मैं एक शिक्षक हूँ ।

दिनकर की लालिमा देख पाता नही,
ढलते हुए भास्कर को सोच पाता नही,
फिर भी,
हर एक प्रहर के, मैं पल पल का रक्षक हूँ,
मैं एक शिक्षक हूँ , मैं एक शिक्षक हूँ।

सुबह का प्रहर हो, या कि दोपहर हो,
गोधुल की बेला हो, या कि ढलती शाम हो,
अपने पराये भी निहारे नही आज तक,

रिश्तों को शायद संजोये नही आज तक,
मन में बसा के भाव, मूल्यों का रक्षक हूँ,
मैं एक शिक्षक हूँ, मैं एक शिक्षक हूँ ।

कब चौराहों पर दोस्तों के साथ था ?,
कब वो वक़्त था जब ख़ुद के मैं पास था ?,
कब मैं सोया ख़ुद के बारे में सोचकर ? ,
कब मैं जागा अपनों को ध्यानकर ?,
अपनी पीड़ा थाम ली बस ख़ुद के ही आग़ोश में,
बस, याद रहा इतना कि, मैं एक शिक्षक हूँ,
मैं एक शिक्षक हूँ , मैं एक शिक्षक हूँ।

कर्तव्य, निष्ठा, प्रेम और समर्पण,
त्याग, तप, ज्ञान और तर्पण,
संस्कृति, संस्कार और समाज का दर्पण,
सबको अहसास है कि इनका मैं रक्षक हूँ,
क्योंकि,
मैं एक शिक्षक हूँ, मैं एक शिक्षक हूँ।

ग़म कभी दिखें नही, दुःख पता चले नही,
नेत्रनीर हों भले, पर कभी दिखें नही,
न किसी से आस हो न ही कोई रास हो,
बस एक कक्षा हो शिष्य मेरे पास हों,
शिष्यों के लिये भी आज, मैं एक परीक्षक हूँ,
मैं एक शिक्षक हूँ, मैं एक शिक्षक हूँ।

धन्यवाद 🙏